सभी ने परमात्मा को ज्योति बिन्दु रूप में ही किया याद

चारो दिशाओं में सभी ने जाने-अनजाने शिव ज्योति बिन्दु को ही परमात्मा पिता के रूप में स्वीकार किया है। भले वो मान्यतायें इतनी ज़्यादा प्रभावी नहीं हैं, फिर भी लोग उन मान्यताओं पर चलने की कोशिश करते हैं।

सबसे पहले इसकी शुरुआत हम मुस्लिम धर्म से करते हैं। उनकी ये मान्यता है कि मक्का में रखे हुए पवित्र पत्थर का दर्शन जीवन में एक बार अवश्य करना चाहिए। उस पत्थर को 'ओवल शेप' में रखा गया है। उसे 'संगे असवद' कहते हैं और 'अल्लाह' भी कहते हैं। उसे कई 'नूर ए इलाही' भी कहते हैं। नूर मतलब प्रकाश। इसलिए हर मुसलमान जब भी नमाज़ पढ़ता है, तो मक्का की दिशा में ही मुख करके पढ़ता है।

जीसस ने भी कहा, 'गॉड इज़ लाइट, आई एम द सन ऑफ गॉड।' उन्होंने कभी नहीं कहा कि 'आई एम गॉड।' वहीं पर 'ओल्ड टेस्टामेंट' में दिखाया है कि हज़रत मूसा जब माउण्टेन पर गये तो उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ, जिसको उन्होंने नाम दिया 'जेहोवा'। इसलिए चर्च में आप जायेंगे तो वहाँ मोमबत्तियाँ जलती हुई मिलेंगी, जो परमात्मा के निराकार स्वरूप का प्रतीक है। वहीं सिक्ख धर्म में भी गुरुनानक जी ने 'एक ओंकार सतनाम, कर्ता पूरख...', ये सब महिमा गुरबाणी में लिखी है। उन्होंने भी परमात्मा को निराकार स्वरूप में देखा।

पारसियों में भी 'अग्यारी' में जायेंगे तब वहाँ पर 'होली फायर' मिलता है। कहा जाता है कि जब पारसी ईरान से भारत आये तो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा ले आये, जिसको कहते हैं अखण्ड ज्योत। जिसे उन्होंने परमात्मा का दिव्य स्वरूप कहा। वहीं भारत में परमात्मा के प्रतीकात्मक रूप में पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण हर स्थान पर शिवलिंग की स्थापना है। जिन शिवलिंगों के नाम या तो नाथ के साथ जुड़े हैं, या तो ईश्वर के साथ जुड़े हैं। जैसे बबूल नाथ, भोलेनाथ, सोमनाथ। ईश्वर में रामेश्वर, गोपेश्वर, पापकटेश्वर आदि। इस प्रकार ये सब भी परमात्मा के ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप होने का प्रमाण देते हैं। अन्य देशों में शिवलिंग के या परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु के नाम जैसे बेबिलोन में 'शिऊन', मिश्र में 'सेव', फिज़ी में 'सेवाजिया', रोम में 'प्रियपस' आदि स्थानों पर भी शिवलिंग की पूजा इन नामों के आधार से की जाती है। इस प्रकार सभी धर्मपिताओं तथा धर्म ग्रन्थों ने भी स्पष्ट रूप से ये दर्शाया है कि परमात्मा शिव ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप ही हैं, और वे हम सभी आत्माओं के परमपिता परमात्मा हैं और उन्होंने ही इस सृष्टि की रचना की है।

कैसे पहचानें अपने प्यारे परमपिता को

भगवान के बारे में आज यथार्थ परिचय किसी के पास भी नहीं है। कोई भगवान को कण-कण में कहता, कोई कहता प्रकृति ही भगवान है, कोई कहता हम सभी भगवान हैं। इतनी ज़्यादा भ्रम की स्थिति क्यों है? जिसको भी हमने देखा, उसी को भगवान कह दिया। क्या ये सत्य है? जैसे जौहरी के पास एक कसौटी होती है जिसपर कसकर वो सोने को परखता है, ठीक वैसे ही हम भी कुछ मान्यताओं की कसौटी पर भगवान को कसकर देखें कि कल अगर भगवान हमारे सामने आ जाये तो हम उसे पहचान सकें, ताकि बाद में पछताना ना पड़े। आज हम आपको भगवान को परखने की कसौटी दे रहे हैं। **वो कसौटी पाँच मुख्य बातों पर आधारित है।**

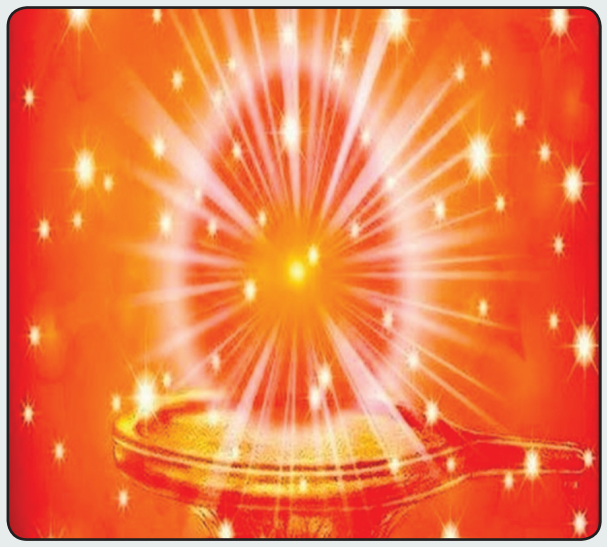

पहला, भगवान वो हो सकता है जो सर्व धर्म मान्य हो। जिसको सभी धर्म वाले परमात्मा स्वीकार करें, उसको हम सत्य कहेंगे। जैसे एक व्यक्ति को कोई भाई कहता, कोई मामा कहता, कोई पिता कहता, लेकिन स्वरूप तो वही रहता है, स्वरूप तो नहीं बदल जाता ना। उसी प्रकार चाहे ईश्वर कहो, अल्लाह कहो, खुदा कहो, लेकिन उसका स्वरूप नहीं बदलेगा, सत्य यही है। **दूसरी कसौटी है,** परमात्मा वो है जो सर्वोच्च हो। जिसके ऊपर कोई ना हो। उसका ना कोई माता पिता हो, ना बन्धू हो, ना सखा हो, ना शिक्षक। उसे कहेंगे परमात्मा।

तीसरा, परमात्मा उसे कहा जायेगा जो सर्वोपरी हो। अर्थात् जिसका जन्म-मरण के चक्र से कोई नाता ना हो। परमात्मा को अजन्मा कहते हैं। अजन्मा के साथ साथ ये भी कहा जाता है कि उसे काल कभी नहीं खा सकता।

चौथा, परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्वज्ञ हो। जिसको तीनों कालों और तीनों लोकों का ज्ञान हो, जो त्रिकालदर्शी हो।

पाँचवा, परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्व गुणों में अनंत हो। जिसकी महिमा के लिए कहते कि धरती को कागज़ बनाओ, समुंदर को स्याही बनाओ और जंगल को कलम बनाओ तब भी उसकी महिमा लिखी न जा सके। तो ये हैं परमात्मा को परखने की वास्तविक पाँच कसौटी। जिस कसौटी पर हमें अपनी मान्यताओं को कसकर देखना है कि क्या वो सत्य है। जल्दी ही अपने सत्य पिता को पहचान लो। कहीं उसे पहचानने में देर न हो जाये।

शंकर, राम और कृष्ण के भी आराध्य 'शिव'

आज तक हमने परमात्मा शिव और शंकर को एक ही रूप में देखा, जाना, पूजा और याद किया। लेकिन यदि हम इनके बीच अंतर पर गौर करें तो हम पायेंगे कि शंकर सदा शिव की याद और आराधना में मग्न हैं। शंकर देवता हैं जबकि शिव परमपिता परमात्मा।

श्रीराम ने भी ज्योतिर्लिंगम शिव की पूजा की और उनसे शक्तियाँ प्राप्त कर रावण पर विजय प्राप्त की। वो ज्योतिर्लिंग रामेश्वरम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। रामेश्वरम अर्थात् राम के ईश्वर। इससे सिद्ध होता है कि शिव राम से भी ऊपर हैं।

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने थाणेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता सर्वशक्तिवान की आराधना की और शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई।

क्या आप भी खुशियों की तलाश में हैं? कहीं आप अपने मन की परेशानियों से जूझ तो नहीं रहे? कहीं आप अपने परिवार और सम्बन्धों से टकराव के दौर से तो नहीं गुज़र रहे? तो देखिये आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' चैनल।

स्थानीय सेवाकेन्द्र का पता:-